परन्तु इस आधार पर श्रमिकों का अनुमान लगाना कठिन होगा क्योंकि हो सकता है कोई श्रमिक अपने कार्य के घंटे समान हो परन्तु उत्पादकता की अलग-अलग क्षमता हो। कार्य की प्रकृति के आधार पर भी मतभेद हो सकता है।

जनसंख्या का वह अनुपात जो श्रमशक्ति में परिणित होता है उसे श्रम शक्ति सहभागिता दर (Labour force Participation Rate) कहते हैं। श्रम सहभागिता दर निम्न प्रकार से ज्ञात करते हैं।

$$\text{श्रम शक्ति सहभागिता} = \frac{\text{श्रमशक्ति}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

श्रमशक्ति सहभागिता दर श्रमशक्ति की आयु, लिंग, शैक्षणिक स्तर, कार्य करने की इच्छा आदि तत्वों पर निर्भर करती है। प्रो. रेनाल्ड्स के शब्दों में "श्रमशक्ति सहभागिता दर सामान्यतः अल्पकाल एवं दीर्घकाल दोनों में लगभग स्थिर रहती है।

(2) कार्य के घंटे (Hours of work) : श्रम की पूर्ति का निर्धारण करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण घटक कार्य के घंटे या समय है। बिना इसको मालूम किये कि श्रमिकों द्वारा कुल कितने घंटे कार्य किया जाता है। इस बात का अनुमान लगाना कठिन है कि श्रम पूर्ति क्या होगी।

(3) कार्य की गति (Speed of work) : श्रमिकों द्वारा कार्य किस गति से किया जाता है यह भी श्रम पूर्ति की मात्रा को प्रभावित करती है। एक श्रमिक जो दुगुनी गति से कार्य करता है वह वस्तुतः दो श्रमिकों की पूर्ति कर रहा है। श्रमिकों की गति अनेक तत्वों पर निर्भर करती है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, जलवायु इत्यादि। अतः सुधार कर भी श्रम के गति में परिवर्तन किया जा सकता है।

(4) श्रम की कार्य कुशलता (Efficiency of labour) : श्रम की कुशलता का अर्थ यहाँ गुणात्मक है जिसके अन्तर्गत यह हम देखते हैं कि श्रमिक कार्य किस किस्म का व कितना उत्पादन करता है, दुर्घटनाएँ कितनी हैं आदि। श्रम की कुशलता बढ़ा कर भी श्रम की पूर्ति बढ़ायी जा सकती है। रेनाल्ड्स ने अपने शब्दों व्यक्त किया है – "श्रम शक्ति में कितने व्यक्ति कितने श्रमिक हैं – इतना जानने मात्र से काम नहीं चलेगा। श्रमिक की कार्य शारीरिक क्षमता, उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य के घंटों की संख्या, कार्य तीव्रता जैसे कार्य